62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 642 **Participant Code:** 119

कीचड़ से भरा रास्ता

~~इंसानियत...~~ ~~अभी~~ ~~अब भी ज़िंदा है~~

खेत से सटकर एक रास्ता था। कीचड़ से भरा उस रास्ते से एक आदमी छतरी और एक सूटकेस लेके चल रहा था। बारिश आज भी बिना बोले आया। "एक छोटे से गाँव के किसी खेत से होकर मुझे जाना पड़ रहा है। वह भी बारिश में, जो रुकने का नाम भी नहीं ले रहा। और यह रास्ता, कीचड़ से भरा, यह मेरे जूतों को ज़रूर काले से लाल कर देगा।" यही सोच उसके मन में आता रहा। उसका नाम लोकेश था, वह किसी ~~प्रैवेट~~ सरकारी कंपनी में ~~नौकरी~~ ~~नौक~~ काम कर रहा था। एक ~~अच~~ अच्छे परिवार से होते हुए भी, उसका मन में सिर्फ और सिर्फ पैसे थे।

आज उसको एक मीटिंग थी, किसी दूर शहर में। लेकिन उसका गाड़ी अचानक से रुक गई। पैसों से भरा उसका मन रुका नहीं। अगर वह मीटिंग में नहीं पहुँचा, तो ~~उसको~~ उसका कमाई नहीं ~~बढ़~~ बढ़ेगा। इसलिए वह चलने लगा। अभी भी ~~a~~ थोड़ा और चलना था। ~~तभी~~ तभी उसने एक छोटी लड़की को देखा जो अकेले उस ~~रास्~~ रास्ते में बैठ रही थी। उसके कपड़े फटी थी, और ~~कुछ~~ पूरा कपड़ों में कीचड़ था।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. ~~So, Write neatly.~~ Don't fold paper. Don't write overleaf).

लोकेश को शहर तक का रास्ता मालूम नहीं था। इसलिए उसने उस लड़की से रास्ता पूछा। "बेटी..यह मुकुट शहर तक कितना मील है?" उस लड़की ने कहा - "पता नहीं"। "ठीक है कोई बात नहीं, क्या तुम मुझे रास्ता बता सकती हो?" उसने पूछा। "सीधे जाकर बाये मुड़ना है। और वहाँ से फिर सीधा चलना है" लड़की ने कहा। लोकेश धन्यवाद बोलकर जाने ही वाला था मगर उसके मन ने उसको रुकने को कहा।

बारिश अचानक रुक गई और सूरज प्रकट हुआ। लोकेश ने छतरी बंद की और उस लड़की के चेहरे में देखा। उसका चेहरा चाँद सा था। लेकिन दुःख से उसका चेहरा मुर्झा हुआ फूल समान था। जब लोकेश ने धन्यवाद बोलकर चलना शुरु किया तभी उस लड़की ने लोकेश का पैर पकड़ा। "मेरी मदद कीजिए साब, मुझे भूक लगी है" "छोड़ो मुझे," उसने पैर को नहीं छोड़ा। लोकेश ने कई बार उसे छुड़वाने की कोशिश की। लेकिन नहीं छुड़वा पाया। उसकी आँखों में बारिश रुक गई थी। मगर उस लड़की के आँखों से बारिश

की बूंदें टपकना शुरु हो गई। आखिर में उस ~~बच्चे~~ छोटी लड़की के सामने वह हार गया। उसने उस लड़की को लेकर एक होटेल गया। वहाँ से उसे खाना दिलवाने के बाद वे दोनो बात-चीत करने लगे। लोकेश को यह पता चला की वह लड़की अनाथ थी। "तुमने मुझे पहले क्यों नही बताया।" ~~"मैं क्यों~~ लोकेश ने पूछा। "मैं ~~क्यू~~ क्यों बताता? वैसे भी आप जैसे लोग तो हमारे जैसे लोगों के बारें में फिकर ही नही करते।"

उसको यह सोचकर पछतावा हुआ की उसने उस लड़की के ~~क्यू~~ बारें में फिकर तक नही ~~किय~~ किया। वह पैसे के लालच में अंधा हो गया था। लड़की ने कहा - "बहुत देर से मैं कीचड़ में बैठा रहा। जानबूजकर नही, बलकी भूक से गिर गई थी।" क्या करें? हमारी ज़िंदगी भी ऐसी ही है ना। हमारे ~~[illegible]~~ जीवन तो कीचड़ से भरा रास्ता है।" लड़की की इस बात ने लोकेश के आँखो को ~~खोल~~ हमेशा के लिए खोल दी। ज़िंदगी में पहली बार उसको इंसानियत का मुल्य पता चला। असल में, जब लोकेश सोलह साल का था, तब उसके माँ-बाँप ~~चल बसे~~ एक एक्सिडेंट के चलते दुनिया छोड़ दी थी।

थी। ~~इसलिए~~ तब से वह भी अनाथ है। इसलिए ~~वह~~ उसे उस लड़की के मन के हालत के बारें में उससे पता चल गया। "आपने जो किया, वह मैं ~~कभी~~ कभी न भूलूंगा। आपके लिए शायद यह एक छोटी चीज़ ~~होगी~~ होगा, मगर मेरेलिए, यह ~~एक~~ एक बहुत बडा ~~तोहफा~~ तोफा है" लड़की ने यह बोलकर चली गई। लोकेश कुछ कह नहीं सका। उसके आँख पानी से भर गया। उसको ~~भूक~~ गरीबी और भूक भरा ज़िंदगी ~~की~~ का भार आखिर में समझ आ गया। उसने ~~भी~~ मीटिंग पर सही समय में पहुँचा। लेकिन वहाँ पर ~~भी~~ उसे ~~ः~~ सिर्फ उस लड़की के बारें में सोच आ रही थी।

उसने अपने मन को ऐसा बना दिया जो पैसों ~~की~~ के पीछे न भागता हो। ~~बल्कि~~ उसने ~~ः~~ यह ठान लिया की वह ~~उस~~ ~~समय~~ उनको मदद करेंगे जो गरीबी से पचना रहे है। तब तीन साल बाद से वह हर एक गरीब ~~को~~ ~~की~~ का भूक मिटाता रहा। उसने दूसरों की मदद से खाने का सामान बाँटने लगा। ~~दी~~

तीन साल बाद, जब वह खाना बाँट रहा था, तब उसने उस लड़की से फिर मिला। लड़की ने भी उसे पहचान लिया था। उसका चेहरा जो पहले ~~मुर्झा~~ एक मुर्झा फूल के तरह था, वह अब एक खिले फूल के समान थी।

लोकेश के ज़िंदगी को, रास्ते मे मिली एक लडकी ने हमेशा के लिए बदल दिया। उस एक लड़की के वजह से बहुत लोगो की भूख मिट गई। यही है इंसानियत का ताकत। एक व्यक्ति के सही विचार से बहुत लोगों का फाईदा हुआ। रास्ते में मिली एक लड़की ने यह सूचना दी की इंसानियत अब भी ज़िंदा है।

~~उसके तरह बहुत लोग~~

उसके तरह बहुत लोग थे, जिनके जीवन कीचड़ से भरा रास्ते में था, जिनके चेहरा ~~मुर्झा~~ एक मुर्झा हुआ फूल के तरह था। उन सबका जीवन उस लड़की के कारण कीचड़ से भरा रस्ते से, एक फूलों से भरा रस्तें में विकसित हो गया। हम भी इंसानियत से दूसरों के कीचड़ से भरे ज़िंदगी को बदल सकते है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).